खंड- ख (वर्णनात्मक प्रश्न)

नेताजी का चश्मा - स्वयं प्रकाश

प्रश्न-1 पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- पानवाला स्वभाव से बहुत ही रसिया , हँसोड़, और मजाकिया था| वह शरीर से मोटा था । उसकी तोंद निकली रहती थी।उसके मुँह में पान ठुंसा रहता था | पान के कारण वह ठीक से बात तक नहीं कर पाता था और हँसने पर उसके लाल-काले दांत खिल उठते थे ।वह बातें बनाने में उस्ताद था। उसकी बोली में हँसी और व्यंग्य का पुट बना रहता था।

प्रश्न-2 तब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा?

उत्तर- जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को अपनी आँखों से देखा नहीं था तब तक उनके मन में कैप्टन की मूर्ति कुछ और थी और उन्होंने सोचा था कि कैप्टन शरीर से हट्टा-कट्टा मजबूत होगा । वह ज़रूर सिर पर फौजी टोपी पहनता होगा। वह रौबदार, अनुशासित और दबंग मनुष्य होगा जिसकी वाणी में भारीपन होगा।

प्रश्न-3 चश्मेवाल मूर्ति का चश्मा बार-बार क्यों बदल देता था?

उत्तर- सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति पर चश्मा नहीं था । इसी कमी की पूर्ति कैप्टन किया करता था । वह चश्मे बेचा करता था। अगर कोई ग्राहक मूर्ति पर लगा फ्रेम माँग लेता तो कैप्टन वह फ्रेम उतारकर उसकी जगह अन्य फ्रेम लगा देता था। इस प्रकार मूर्ति पर चश्मे बदलते रहते थे।

प्रश्न-4 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर सपष्ट कीजिए कि देश प्रेम प्रकट करने के लिए सैनिक होना ही आवश्यक नहीं है?

उत्तर- देश प्रेम प्रकट करने के लिए बडे-बड़े नारों की आवश्यकता नहीं है । न ही सैनिक होने की आवश्यकता है। देश प्रेम तो छोटी-छोटी बातों से प्रकट हो सकता है। यदि हमारे मन में देश के प्रति प्रेम है तो हम देश की हर छोटी से छोटी कमी को पूरा करने में अपना योगदान दे सकते हैं ।' नेताजी का चश्मा' पाठ में कैप्टन ने मूर्ति पर चश्मा लगाकर इसी बात को उजागर किया है।

बालगोबिन भगत- रामवृक्ष बेनीपुरी

प्रश्न-1 बालगोबिन भगत की पुत्रबधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर- बालगोबिन भगत की पुत्रबधू जानती थी कि भगत जी संसार में अकेले हैं और उनका एकमात्र पुत्र मर चुका है। वे बूढ़े है और भक्त हैं। उन्हें घर-बार और संसार में कोई रूचि नहीं है। अतः वे अपने खाने-पीने और स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दे पाएँगे। इसलिए वह सेवा-भाव से उनके चरणों में अपने दिन बिताना चाहती थी। वह उनके लिए भोजन और दवा-पानी का प्रबंध करना चाहती थीं।

प्रश्न-2 बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

उत्तर- बालगोबिन भगत की दिनचर्या का प्रत्येक कार्य आश्चर्यजनक होता था । उस दिनचर्या में कहीं भी कोई चूक उनके द्वारा संभव नहीं थी। उनकी दिनचर्या लोगों को हैरान कर देती थी । लोग भगत जी की सरलता, सादगी और निस्वार्थता पर हैरान होते थे । भगत जी भूलकर भी किसी से कुछ नहीं लेते थे । वे बिना पूछे किसी भी चीज़ को छूते नहीं थे। यहाँ तक कि किसी दूसरे के खेत में शौच भी नहीं करते थे। लोग उनके इस व्यवहार से मुग्ध थे। लोग भगत जी पर तब और भी आश्चर्य करते थे जब वे भोरकाल में उठकर दो- तीन मील दूर स्थित नदी में स्नान कर आते थे। वापसी पर वे गाँव के बाहर स्थित पोखर के किनारे प्रभु-भक्ति के गीत टेरा करते थे। उनके इन प्रभावी गानों को सुनकर लोग सचमुच हैरान रह जाते थे।

प्रश्न-3 भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस प्रकार अभिव्यक्त की ?

उत्तर - अपने बेटे की मृत्यु पर भगत की भावनाएँ चली आ रही परंपरा से भिन्न थीं। उन्होंने अपनी भावनाएँ इस प्रकार अभिव्यक्त की -

1-मृतक पुत्र को आँगन में चटाई पर लिटाकर सफ़ेद कपड़े से ढँक दिया।

2-मृतक पुत्र के ऊपर फूल और तुलसी के पत्ते बिखेर दिए और सिरहाने एक दीपक जलाकर रख दिया।

3-उसके समीप आसन पर बैठकर हमेशा की तरह कबीर के पदों को गाने और पतोहू को समझाने लगे, आत्मा परमात्मा में मिल गई है। विरहिणी अपने प्रेमी (ईश्वर) से जाकर मिल गई है।

4-पतोहू को समझाने लगे कि यह वक्त रोने का न होकर उत्सव मनाने का है।

प्रश्न-4 खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधू कहलाते थे?

उ- बालगोबिन भगत खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ थे। उनका साफ़-सुथरा मकान था, फिर भी सर्वथा वे साधुता की श्रेणी में आते थे। वे कबीर को अपना साहब मानते थे। वे कबीर के पदों को ही गाते थे और उनके आदेशों पर चलते थे। वे सभी से खरा व्यवहार रखते थे। दो टूक बात कहने में न कोई संकोच करते थे, न किसी से झगड़ते थे। भगत जी सरलता, सादगी और निस्वार्थ जीवन जीते थे। वे अन्य किसी की चीज़ को बिना पूछे व्यवहार में नहीं लाते थे। वह अपनी प्रत्येक वस्तु पर साहब का अधिकार मानते थे। परिश्रम से पैदा की गई फ़सल को पहले साहब को अर्पित करते थे, उसके बाद स्वयं प्रयोग करते थे। इस प्रकार त्याग की प्रवृत्ति और साधुता का व्यवहार उन्हें साधु की श्रेणी में खड़ा कर देता है।

प्रश्न-5 पाठ के आधार पर बताइए कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है?

उत्तर - भगत कबीर को ही अपना साहब मानते थे। उनके ही निर्देशों का यथा-संभव पालन करते थे। कबीर के प्रति उनकी श्रद्धा निम्नलिखित रूपों में प्रकट हुई है-

1- भगत सिर पर सदैव कबीर-पंथी टोपी पहनते थे, जो कनपटी तक जाती थी।

2- कबीर के रचित पदों को ही गाते थे।

3- कबीर को ही अपना ईश्वर मानते थे।

4- वे उन्हीं के बताए आदर्शों पर चलते थे।

5- उनकी कमाई से जो कुछ पैदा होता था उसे पहले कबीर के दरबार में भेंट करते थे और वहाँ से जो प्रसाद के रूप में प्राप्त होता था उससे ही निर्वाह करते थे।

6- भगत पर कबीर-विचार-धारा इतना प्रभाव कि उन्हीं की तरह रुढियों का विरोध करते थे।

8- उनकी वेश-भूषा भी कबीर की तरह थी। कमर में एक मात्र लंगोटी, सिर पर टोपी और सर्दियों में काली कमली ओढ़ते थे।

लखनवी अंदाज़ – यशपाल

प्रश्न -1 नवाबों में एक विशेष प्रकार की नफासत और नज़ाकत देखने को मिलती है। 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- नवाब सदा से एक विशेष प्रकार की नफासत और नज़ाकत के लिए मशहूर रहे हैं। लखनवी अंदाज़ पाठ में नवाबों की इसी नफासत और नजाकत का उदाहरण मिलता है। नवाब साहब खीरे खाने के लिए यत्नपूर्वक

तैयारी करते हैं। खीरे काटकर उनपर नमक मिर्च लगाते हैं, किंतु बिना खाये ही केवल सूँघकर रसास्वादन कर खिड़की से बाहर फेंक देते हैं और फिर इस प्रकार लेट जाते हैं जैसे इस सारी प्रक्रिया में बहुत थक गये हों। ऐसी नफासत और नज़ाकत नवाबों में ही दिखाई देती हैं।

प्रश्न-2 आपके विचार मेँ नवाब साहब ने नमक मिर्च लगे खीरे की फांकों को खिड़की से बाहर क्यो फेंक दिया?

उत्तर- नवाब साहब ने नमक मिर्च लगे खीरे की फांकों को खिड़की से बाहर इसलिये फेंक दिया होगा, क्योंकि वे लेखक के सामने खीरे जैसी सामान्य वस्तु का शौक करने में संकोच का अनुभव कर रहे होंगे। अपनी खानदानी रईसी और नवाबी का प्रदर्शन करने के लिये उन्होंने खीरे की फांकें फेंक दी।

प्रश्न-3 'लखनवी अंदाज़' पाठ मेँ किस पर और क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर- 'लखनवी अंदाज़' पाठ मेँ नवाब साहब के माध्यम से समाज के उस सांमती वर्ग पर व्यंग्य किया गया है। जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन शैली का आदी है। नवाब साहब द्वारा अकेले में खीरे खाने का प्रबंध करना और लेखक के आ जाने पर खीरों को सूँघ कर खिड़की से बाहर फेंककर अपनी नवाबी रईसी का गर्व अनुभव करना इसी दिखावे का प्रतीक है। समाज में आज भी ऐसी दिखावटी संस्कृति दिखाई देती है।

प्रश्न-4 बिना विचार घटना और पात्रोँ के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? लेखक के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैँ?

उत्तर- हम लेखक के इस विचार से बिल्कुल भी सहमत नहीँ हैँ कि बिना विचार घटना और पात्रोँ के भी कहानी लिखी जा सकती है। किसी भी कहानी के लिये उसकी आत्मा होता है– कथानक। यह कथानक अनिवार्य रूप से किसी विचार अथवा घटना पर आधारित होता है, जिसे पात्रोँ के माध्यम से ही व्यक्त किया जा सकता है। ये पात्र और घटनायेँ वास्तविक भी हो सकती हैँ और काल्पनिक भी, किन्तु इनके अभाव मेँ कहानी की कल्पना भी नहीँ की जा सकती।

एक कहानी यह भी - मन्नू भण्डारी

प्रश्न 1. लेखिका ने अपने पिता को किन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते देखा था?

उत्तर- लेखिका ने अपने पिता को नाम, सम्मान, प्रतिष्ठा, समाज के काम, विद्यार्थियों को अपने घर में रखकर पढ़ाने, खुशहाल दरियादिल, कोमल और संवेदनशील होने के गुणों के भग्नावशेषों को ढोते देखा था।

प्रश्न 2. वह कौन सी घटना थी जिसको सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर- लेखिका जिस कॉलेज में पढ़ती थी , उस कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र पिताजी के नाम आया था। उसमें पिता जी से पूछा था कि उस पर अनुशासनात्मक कार्यवाही क्यों नहीं की जाए ? पिताजी को इसलिए कॉलेज बुलाया था। पिताजी उस पत्र को पढ़कर आगबबूला हो गए। उन्हें लगा कि उनके पाँच बच्चों में से लेखिका ने उनके नाम पर दाग लगा दिया। वे लेखिका पर उबलते हुए कॉलेज पहुँचे। पिताजी के पीछे लेखिका पड़ोस में जाकर बैठ गई जिससे वह लौटने पर पिता जी के क्रोध से बच सके परन्तु जब वे कॉलेज से लौटे तो बहुत प्रसन्न थे, चेहरा गर्व से चमक रहा था। वे घर आकर बोले कि उसका कॉलेज की लड़कियों पर बहुत रौब है। पूरा कॉलेज तीन लड़कियों के इशारे पर खाली हो जाता है। प्रिंसिपल को कॉलेज चलाना असंभव हो रहा है। पिताजी को उस पर गर्व होने लगा कि वह देश की पुकार के समय देश के साथ चल रही है , इसलिए इसे रोकना असंभव था। यह सब सुनकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ न ही अपने कानों पर।

प्रश्न 3. लेखिका का 'पड़ोस कल्चर' से क्या तात्पर्य है? आधुनिक जीवन में 'पड़ोस कल्चर' विच्छिन्न होने का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर- 'पड़ोस कल्चर' से लेखिका का तात्पर्य है- घर के आसपास रहने वालों की संस्कृति। आधुनिक जीवन में अत्यधिक व्यस्तता के कारण महानगरों के फ्लैट में रहने वालों की संस्कृति ने परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' से बच्चों को अलग करके उन्हें अत्यधिक संकीर्ण, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

प्रश्न 4. माँ के धैर्य और सहनशक्ति को लेखिका ने धरती से भी ज्यादा क्यों बताया है?

उत्तर- लेखिका ने माँ के धैर्य और सहनशक्ति को लेखिका ने धरती से भी ज्यादा बताया है क्योंकि पृथ्वी की सहनशक्ति और धैर्य तब जवाब दे देते हैं जब वह भूकंप बाढ़ आदि के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। लेकिन लेखिका की माँ पिताजी की प्रत्येक ज़्यादती को चुपचाप सहन कर जाती है और बच्चों को प्रत्येक उचित-अनुचित फरमाइश और ज़िद को अपना कर्तव्य मानकर सहज भाव से स्वीकार कर लेती थी ।

प्रश्न 5. लेखिका ने यह क्यों कहा कि पिताजी कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे?

उत्तर- लेखिका के पिताजी में विशिष्ट बनने और बनाने की प्रबल लालसा थी , दूसरी ओर उनमें अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर भी सजगता थी। वे आधुनिकता और परंपरा दोनों का निर्वाह करना चाहते थे। एक ओर लेखिका के जलसे-जुलूसों में नारे लगवाने-लगाने, हड़ताल करवाने और भाषण देने के विरुद्ध थे तो दूसरी ओर लेखिका के इन्हीं कार्यों पर गर्व से फूल उठते थे इसलिए लेखिका ने कहा कि पिताजी एक साथ कितनी तरह के अंतर्विराधों में जीते थे।

प्रश्न 6. लेखिका मन्नू भंडारी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- लेखिका स्वतंत्र विचारों की पक्षधर थी जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया। वह साहसी और जुझारू व्यक्तित्व की घनी थी।

प्रश्न 7. लेखिका की साहित्य के प्रति रूचि जागृत होने का प्रमुख कारण क्या है?

उत्तर -लेखिका की अध्यापिका शीला अग्रवाल के प्रोत्साहन व मार्गदर्शन में उन्होंने हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों की कृतियों का अध्ययन किया। साथ ही वे अपनी अध्यापिका के साथ साहित्यिक चर्चाएँ भी करती रहीं।

प्रश्न 8. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में लेखिका का क्या सक्रिय योगदान रहा?

उत्तर- लेखिका स्थानीय स्तर पर धरने , प्रदर्शन, हड़ताल कराती व अंग्रेजी सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करती व सार्वजनिक सभाओं में भाषण प्रस्तुत करती।

प्रश्न 9. लेखिका के पिता के क्रोधी और शक्की होने के क्या कारण थे?

उत्तर- लेखिका के पिता महत्वाकांक्षी थे , उनमें नवाबी आदतें थीं तथा वे सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठा पाने व शीर्ष पर रहना चाहते थे। इस क्षेत्र में असफल रहने व आर्थिक रूप से पिछड़ने पर वे क्रोधी हो गए। साथ ही अपनों ही के द्वारा विश्वासघात किए जाने पर वे शक्की हो गए।

प्रश्न 10. लेखिका के पिता उन्हें सामान्य लड़कियों से कैसे भिन्न बनाना चाहते थे?

उत्तर- लेखिका के पिता चाहते थे कि उनकी बेटी सामान्य लड़कियों की तरह गृहस्थी के कार्यों में अपनी प्रतिभा धूमिल न कर रचनात्मक, सृजनात्मक कार्यों एवं सामाजिक, राजनैतिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी करें तथा जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी छवि स्थापित करें।

नौबत खाने में इबादत - यतींद्र मिश्र

प्रश्न 1. शहनाई और डुमराँव एक दूसरे के लिए उपयोगी कैसे हैं?

उत्तर- शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग किया जाता है। रीड 'नरकट' नामक एक घास से बनाई जाती है जो मुख्य रूप से डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है। इसी के कारण शहनाई जैसा वाद्य बजता है।

प्रश्न 2. संगीत में सम का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि बिस्मिल्ला खां को सम की समझ कब और कैसे आ गई थी?

उत्तर- संगीत में सम का आशय है संगीत का वह स्थान जहाँ लय की समाप्ति और ताल का आरंभ होता है। बिस्मिल्ला खां में सम की समझ बचपन में ही आ गई थी। जब वह अपने मामा अलीबख्श खां को शहनाई बजाते हुए सम पर आते सुनता तो धड़ से पत्थर ज़मीन पर मारकर दाद देता था।

प्रश्न 3 काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया है?

उत्तर- काशी संस्कृति की पाठशाला है यहाँ भारतीय शास्त्रों का ज्ञान है , कलाशिरोमणि यहाँ रहते हैं । यह हनुमान और विश्वनाथ की नगरी है यहाँ का इतिहास बहुत पुराना है । यहाँ प्रकांड ज्ञाता , धर्मगुरू और कलाप्रेमियों का निवास है।

प्रश्न 4. बिस्मिला खां दो कौमों में भाईचारे की प्रेरणा कैसे देते रहे?

उत्तर- बिस्मिल्ला खां जाति से मुसलमान थे और धर्म की दृष्टि से इस्लाम धर्म को भेजने वाले पाँच वक्त नमाज पढ़ने वाले सच्चे मुसलमान। मुहर्रम से उनका विशेष जुड़ाव था। वे बिना किसी भेदभाव के हिन्दू , मुसलमान दोनों के उत्सवों में मंगल ध्वनि बजाते थे। उनके मन में बालाजी के प्रति विशेष श्रद्धा थी। वे काशी से बाहर होने पर भी विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते और शहनाई बजाते थे। इस प्रकार वे दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे।

प्रश्न 5. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर- हमें बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की सादगी , फकीरी स्वभाव, स्वाभिमान तथा कला की प्रति उनकी अनन्य भक्ति और समर्पण ने प्रभावित किया है। वे अपने जीवन में अपने मज़हब के प्रति अत्यध्कि समर्पित होते हुए भी किसी धर्म और जाति की संकीर्णताओं में नहीं बंधे। सच्चे मुसलमान होते हुए भी काशी के बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति श्रद्धा रखना उनके व्यक्तित्व की अन्यतम विशेषता है। भारतरत्न जैसी सम्मानित उपाधि मिलने के बाद भी उनके व्यक्तित्व में किसी प्रकार का अहंकार नहीं आने पाया। फटा हुआ तहमद बाँधकर ही वे सभी आगंतुकों से मिलते थे यह उनके व्यक्तित्व की सादगी और फकीराना स्वभाव का ही परिचायक है।

प्रश्न 6. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर- डुमराँव गाँव की सोन नदी के किनारों पर पाई जाने वाली नरकट घास से शहनाई की रीड बनती है। शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराँव गाँव ही है। 3. बिस्मिल्ला खाँ के परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के ही निवासी थे। इन्हीं कारणों से शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किया जाता है।

प्रश्न 7. सुषिर वाद्यों से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- सुषिर वाद्यों से अभिप्राय है- फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य। जैसे- शहनाई, बीन, बाँसुरी आदि।

प्रश्न 8. शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाध् क्यों दी गई होगी?

उत्तर- शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि देने के कारण निम्नलिखित रहे होंगे -

1. फूँककर बजाए जाने वाले वाद्यों में शहनाई सबसे अधिक सुरीली है।
2. मांगलिक विधि-विधानों में इसका उपयोग होता है।

प्रश्न 9. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक निम्नलिखित कारणों से कहा गया है -

1. अपना सानी न रखने के कारण।

2. मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करवाने वाले होने के कारण।

प्रश्न 10. काशी में हो रहे कौन-कौन से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर- काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे -

1. संगीत साहित्य और अदब की बहुत-सी परम्पराओं का लुप्त होना।

2. खान-पान संबंधी पुरानी चीजें न मिलना।

3. गायकों के मन में संगतियों के प्रति आदर न रहना।

4. गायक द्वारा रियाज़ करने में कमी।

5. सांप्रदायिक सद्भाव का कम होना।

सभ्यता और संस्कृति - भदंत आनंद कौसल्यायन

प्रश्न 1. संसार में किसी भी चीज को पकड़कर नहीं बैठा जा सकता क्यों?

उत्तर- प्रतिक्षण बदलते संसार में कोई भी वस्तु स्थायी अथवा अक्षुण्ण नहीं है। समय परिवर्तन के साथ-साथ उनमें बदलाव आता रहता है और आना भी चाहिए। इसलिए संसार में किसी भी चीज़ को पकड़कर नहीं बैठा जा सकता।

प्रश्न 2. आशय स्पष्ट कीजिए- जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता।

उत्तर- आशय मनुष्य ने अपनी योग्यता , प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के द्वारा अपने आत्म-विनाश के अनेक साधन जुटा लिए हैं और वह ऐसे अन्य साधनों को जुटाने के लिए दिन-रात लगा हुआ है। लेखक-प्रश्न करता है कि उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ? वास्तव में हमें यह उनकी असभ्यता ही समझनी चाहिए क्योंकि उनमें मानव कल्याण की अपेक्षा मानव के अहित की भावना है।

प्रश्न 3. लेखक के अनुसार सभ्यता और संस्कृति में क्या अन्तर है?

उत्तर- लेखक के अनुसार व्यक्ति की वह योग्यता , प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा संस्कृति है जिसके बल पर वह आविष्कार करता है जबकि उसके द्वारा अपने लिए तथा दूसरों के लिए किया गया आविष्कार सभ्यता है।

प्रश्न 4. किस संस्कृति को कूड़े-करकट का ढेर कहा गया है? और क्यों?

उत्तर- उस संस्कृति को कूडे-करकट का ढेर कहा गया है जिसमें जातिवाद ऊँच-नीच , छुआछूत, अमीर-गरीब, अनेक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, धर्मिक कर्मकांड, परम्पराएँ आदर्श और जीवन मूल्य, कुरीतियाँ सम्मिलित हैं। क्योंकि परिवर्तित समय में इनका कोई अर्थ नहीं रह गया है।

प्रश्न 5. सिद्दार्थ ने अपना घर क्यों त्याग दिया?

उत्तर- आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्दार्थ ने अपने घर का त्याग इसीलिए किया ताकि तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके। इसके लिए उन्होंने कठोर तपस्या की और सत्य की खोज भी की।

प्रश्न 6. संस्कृति निबंध् का प्रतिपाद्य / उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- संस्कृति निबंध् का उद्देश्य सभ्यता और संस्कृति शब्दों की व्याख्या करना है। सभ्यता और संस्कृति शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना तथा मानव संस्कृति को अविभाज्य बताकर उसे मनुष्य के लिए कल्याणकारी बताना है।

प्रश्न 7. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहते है?

उत्तर- अपनी बुद्धि अथवा विवेक के आधर पर किसी भी नए तथ्य का दर्शन करने वाला व्यक्ति वास्तविक अर्थो में 'संस्कृत व्यक्ति' है। उदाहरणतया न्यूटन संस्कृत मनुष्य है , क्योंकि उसने अपनी बुद्धि के बल पर गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत खोजा।

प्रश्न 8. किन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागों का आविष्कार हुआ होगा?

उत्तर- निम्नलिखित महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई- धागों का आविष्कार हुआ होगा- 1. तन ढकने के लिए 2. शीत तथा उष्णता से बचने के लिए 3. शरीर सजाने की प्रवृत्ति के कारण। आज कल यह तकनीक बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है। जूते सिलने से लेकर शल्य चिकित्सा तक में इसका उपयोग हो रहा है।

प्रश्न 9. लेखक ने सर्वस्व त्याग करने वाली संस्कृति को स्पष्ट करने के लिए किन-किन महामानवों के उदाहरण दिए हैं?

उत्तर- निम्नलिखित महामानवों के उदाहरण दिए हैं -

1 - रूस के भाग्य विधता लेनिन द्वारा डैस्क में रखे हुए डबलरोटी के सूखे टुकड़ों को स्वयं न खाकर दूसरों को खिला देने का उदाहरण।

2 - संसार भर के मजदूरों को सुखी देखने की इच्छा में स्वयं के जीवन को कष्ट पूर्ण बनाने वाले कार्ल मार्क्स का उदाहरण।

3 - दुखी मानवता को सुखी करने की इच्छा से सिद्दार्थ द्वारा गृह त्याग देने का उदाहरण।

प्रश्न 10. लेखक की दृष्टि में सभ्यता और संस्कृति की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

उत्तर- सभ्यता और संस्कृति की सही समझ इसलिए नहीं बन पाई क्योंकि हम इन दोनों बातों को एक ही समझते हैं। यह जानना जरूरी है कि दोनों एक नहीं हैं, फिर भी इनमें इतनी नजदीकी है कि इनमें स्पष्ट अंतर सामान्य लोगों को नहीं समझ आते हैं।

प्रश्न 11. लेखक के अनुसार सभ्यता क्या है?

उत्तर- लेखक के अनुसार सभ्यता संस्कृति का परिणाम है। मनुष्य के खाने-पीने के तरीके पहनने ओढ़ने के तरीके हमारे यातायात के साधनों का उपयोग जीवन जीने का तरीके ही सभ्यता है।